भवानी प्रसाद मिश्र की काव्य विषयक मान्यताएँ

प्रा. डॉ. मनोहर गंगाधरराव चपले

भवानी प्रसाद मिश्र हिंदी के चर्चित गांधीवादी कवि हैं। उनकी काव्य विषयक मान्यताएँ दूसरा सप्तक के वक्तव्य तथा उनकी कविताओं से स्पष्ट होती हैं। भवानी जी की कविता साधारण जनमानस की संवेदनाओं की तथा कवि के संवेदनात्मक अनुभवों को अभिव्यक्त करती है। अपनी रचना प्रक्रिया तथा अपने जीवन के बारे में बताते हुए कवि, जीवन और कविता के संबंध को रेखांकित करते हुए लिखते हैं- "छोटी सी जगह में रहता था, छोटी सी नदी नर्मदा के किनारे, छोटे से पहाड़ विंध्याचल के आंचल में छोटे-छोटे साधारण लोगों के बीच एक दम घटना-विहीन, अविचित्र मेरे जीवन की कथा है। साधारण मध्यवित परिवार में पैदा हुआ, साधारण पढा लिखा और काम जो भी किए वे भी असाधारण से अछूते मेरे आस-पास के तमाम लोगों की सी सुविधाएँ-असुविधाएँ मेरी थी। मैं नहीं जानता किस बात को सुनाने लायक मान कर सुनाने लगा, खास कर जब उस सुनाने का मतलब यह माना जाएगा कि इस सब का मेरी कविता का गहरा संबंध है।" उपर्युक्त कवि कथन से यह विदित होता है कि कवि अपनी काव्य रचना की रचना प्रक्रिया को अत्यन्त व्यापक और अपने जीवनानुभव से संबद्ध मानता है। वह यह नहीं जानता कि कौन-सी विशेष घटना उसकी काव्य की रचना प्रक्रिया में अंतर्निहित है, अत: वह जीवन की सभी घटनाओं को काव्य की प्रेरणा मानता है। कवि का सामाजिक परिवेश एवं व्यक्तित्तव सादगी भरा तथा गांधी दर्शन से प्रभावित रहा यही जीवन संदर्भ उनकी कविता में झलकता है। वे कविता में अलंकरण और अन्य उपकरण लाकर चमत्कार निर्माण नहीं करते बल्कि अपने अनुभवों को कविता की वस्तु में सरलता से अभिव्यक्त करते हैं। उनकी कविता की विषय वस्तु साधारण जनमानस से भरी हुई है। वह जनता, लोकवादी विचारधारा से तथा अहिंसावादी, परोपकार भावना को अभिव्यक्ति देती है।

भवानी प्रसाद मिश्र के काव्य पर विचार करते हुए संतोष कुमार तिवारी लिखते हैं- "कवि युगबोध और युगचेतना से असंपृक्त नहीं है। उसमें समसामयिकता के प्रति जागृकता है, साथ ही शाश्वत जीवंत तत्तवों का समाहार भी वह हमें तीखी किरणों से कुम्हलाना नहीं है, सूरज की रोशनी से आँखें मिलाकर नींद को प्रकाशमय जागृति में दबलना और अपनी बुद्धि को एक सुनिश्चित चिंतन और दिशा देती है। कवि में निसंदेह युग चेतना के अनुरूप स्वस्थ प्रतिबद्धता और समष्टि चिंतन का प्रेरक भाव बिंदु भी।" कवि भवानी प्रसाद मिश्र अनुभूति की सच्चाई और अभिव्यक्ति की इमानदारी पर बल देते हैं। उनके अनुसार कवि की पहली शर्त है कि 'वह मन की बात कहें।' इसका धरातल समाज से जुड़ा हुआ हो और भाषा भी सामाजिक बोलचाल की हो। भवानी प्रसाद मिश्र का स्पष्ट मत है कि कविता केवल सजावट नहीं है, कविता के लिए आवश्यक है कथ्य, शैली नहीं। कविता के कथ्य और शैली के संबंध में उनका स्पष्ट मत है- "शैली कविता की प्रधान बात तो होती है, मगर आखिरकार वह किसी भीतरी चीज का बाहरी रुप है, सर्वाधिक प्रधान बात तो वह नहीं ही है।"

कवि भवानी प्रसाद मिश्र अपनी काव्य रचना प्रक्रिया के प्रभाव ग्रहण की बात अस्वीकार करते हैं, उनका मानना है कि उनके पूर्ववर्ती और परवर्ती कवियों में किसी का प्रभाव उन पर नहीं है, न ही भारतीय और न पाश्चात्य। भाषा के संदर्भ में उन पर प्रभाव वर्ड्स्वर्थ का है। उन्हीं के शब्दों में, "अंग्रेजी कवियों में मैंने वर्ड्स्वर्थ पढ़ा था और ब्राउनिंग विस्तार से। बहुत अच्छे मुझे लगते थे दोनों। वड्स्वर्थ की एक बात मुझे पटी की कविता की भाषा यथासंभव बोलचाल के करीब हो। तत्कालीन हिंदी कविता इस खयाल के बिलकुल दूसरी सिरे पर थी। तो मैंने जाने अनजाने कविता की भाषा सहज रखी।" भारतीय कवि के

प्रभाव के संबंध में स्वयं कवि का मानना है कि उन पर बांग्ला कवि रविद्रनाथ ठाकुर का प्रभाव है और उनका साहित्य पढने के लिए उन्होंने बांग्ला सीखी। कुछ कविताओं पर अन्य कवियों से अधिक रविद्रनाथ ठाकुर की छाप अधिक है।

कवि अपने अनुभवों की अभिव्यक्ति को प्राथमिकता देता है। वह अपने स्वानुभूत चेतना की अभिव्यक्ति मानने के पक्ष में है। उनके शब्दों में- "मैं भगवान की बात कम करता हूँ- जब करता हूँ तो रहस्य की तरह नहीं। क्योंकि इस सिलसिले में मेरे सामने जो कुछ साफ है वह खूब साफ है और जो साफ नहीं है उसकी बात करना दूसरों के लिए एक उलझन की संभावना पैदा करने जैसा है कदाचित् इसीलिए मैंने अपनी कविता में प्राय नहीं लिखा है जो मेरी ठीक पकड़ में आ गया है। दूर की कौडी लाने की महत्वाकांक्षा भी मैंने कभी नहीं की।"

भवानी जी की कविता पर विचार करने से उनकी यह बात अधिक स्पष्ट होती है। उनकी कविता प्रयत्नों ओर अद्भुत बातों से नहीं बनी है जिस भावना विचार पर उनकी दृढ दृष्टि और मान्यता है उसी को उन्होंने कविता में अभिव्यक्त किया। पाठक को उलझन में डालने वाली शब्द-बिंब रचना इनके काव्य में अनुपलब्ध है। 'दूर की कौडी' इनके काव्य में नहीं के समान है।

भवानी प्रसाद मिश्र की मान्यता है कि कविता की विषय-वस्तु अत्यन्त व्यापक है और साधारण से लेकर अति-उच्च संवेदना काव्य का विषय है। किंतु उन्होंने साधारण भावभूमि को चुना। अपनी काव्य वस्तु के संबंध में वे लिखते हैं- "बहुत मामूली रोजमर्रा के सुख-दुख मैंने इनमें कहे हैं जिनका एक शब्द भी किसी को समझाना नहीं पड़ता" अर्थात् वे बोधगम्यता को काव्य का मानदंड मानते हैं। वे आगे लिखते हैं- "शब्द टप-टप टपकते हैं फूल से, सही हो जाते हैं मेरी भूल से- बेशक `भूल से' ही यह सब मेरे हाथों बन पड़ता है, क्योंकि कभी कोई दर्शन, वाद या जिसे टेकनिक कहते हैं मैंने नहीं सोचा। बहुत से खयाल अलबत्ता मेरे हैं, मगर मैं देखता हूँ कि ज्यादातर लोगों के खयाल भी तो वही है। वे भले ही उन खयालों के मुताबिक न करते हो" उपर्युक्त विवेचन से भवानी प्रसाद मिश्र जी की काव्य विषयक मान्यताए स्पष्ट होती है। वे कविता के विषय वस्तु को जनसाधारण की भावनाओं तथा संवेदनाओं से संपृक्त मानते हैं और अपने अनुभवों की प्रामाणिक प्राथमिक अभिव्यक्ति पर बल देते हैं। कविता की टेकनिक सहज साध्यता और सहज अनुभवों को मानते हैं, काव्य की भाषा पर उनका मेल वर्डस्वर्थ से बनाना है। अत: बोलचाल की सहज बोधगम्य भाषा कविता का उपकरण है।

सारांश रूप से उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि भवानी जी दूसरा सप्तक के सरल कवि हैं, उनकी काव्यानुभूति एवं साहित्यिक समझ सहज मानवीयता से विकसित है, उनका वैचारिक आधार सामाजिक स्थितियों से भरा और उन्ही अभिव्यक्तियों को कविता मानता है।

महात्मा बसवेश्वर महाविद्यालय, लातूर